***Dr. REETU RAJ***

*Assistant Professor*

*Department of HISTORY*

*RAJA SINGH COLLEGE SIWAN*

*(Jai Prakash University Chapra)*


*Lecture Notes on -* **" गुर्जर-प्रतिहार शासन का महत्त्व ।"** *( for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

# गुर्जर-प्रतिहार शासन का महत्त्व ।

हर्षोत्तर उत्तर भारत में गुर्जर-प्रतिहार सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी और शक्तिशाली शासक के रूप में उभर कर सामने आए । उन्होंने पुनः उत्तरी भारत में एक बड़ा साम्राज्य स्थापित किया और राजनीतिक एकता को स्थापित कर उसे मजबूती प्रदान किया । इतिहासकार आर.सी. मजूमदार अंतिम साम्राज्य निर्माता हर्ष को न मानकर गुर्जर-प्रतिहार को ही मानते हैं जिन्होंने प्रयः100 वर्ष तक उत्तर भारत में उससे कहीं अधिक बड़ा साम्राज्य स्थापित करके रखा । प्रतिहारो मैं वत्सराज, नागभट्ट द्वितीय, मिहिरभोज और महेंद्रपाल जैसे योग्य शासक हुए जिन्होंने पाल और राष्ट्रकूट सम्राटों के निरंतर विरोध के बावजूद भी उत्तर भारत में एक बड़ा साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की । प्रतिहारों की राष्ट्र के प्रति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन यह है कि उन्होंने अरबों को सिंध से आगे नहीं बढ़ने दिया । एलफिन्स्टन और उसके बाद के सभी इतिहासकारों ने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया है की अरबों की विशाल शक्ति अपनी

चरम सीमा पर होते हुए भी भारत में प्रगति करने में क्यों असफल हुई । इसका मुख्य कारण प्रतिहारो की शक्ति थी। प्रतिहारो ने अरबों  को  सिन्ध से आगे नहीं बढ़ने दिया । अरबों ने स्वयं प्रतिहार- सम्राटों के वैभव और शक्ति की प्रशंसा की है । अरब- यात्री सुलेमान ने मिहिरभोज को 'इस्लाम धर्म का सबसे बड़ा शत्रु' पुकारा था । इससे स्पष्ट हो जाता है कि भारत में अरबों की असफलता का मुख्य कारण प्रतिहारों की शक्ति थी। उन्होंने केवल साम्राज्य का ही निर्माण नहीं किया, बल्कि प्रशासनिक सुव्यवस्था भी कायम की । इस समय के अंधकारयुगीन भारत में अपनी प्रशासनिक और सांस्कृतिक उजालों से एक साध्य सीमा तक अंधकार को हटाने का सार्थक प्रयास किया । प्रतिहारों ने कन्नौज को काफी प्रतिष्ठा दी तथा इसे सुप्रतिष्ठित करने के लिए चार सौ वर्षों तक कन्नौज लेकर हुए त्रिकोणात्मक संघर्ष में पूरे मनोबल से भाग लिया और इसे अपने अधीन भी रखने में अधिकांशतः सफल रहे । प्रतिहारों के अधीन अनेक सामंत और अधीनस्थ शासक थे जिन्हें प्रशासनिक स्वायत्तता प्राप्त थी । राज्य में शांति सुव्यवस्था थी और चोर-डाकुओं का भय नहीं था । महाकवि राजशेखर

महेन्द्रपाल के दरबारी रचनाकार थे । उनकी प्रसिद्ध रचनायें संस्कृत में हैं - बाल-रामायण और कर्पूरमंजरी । सोमेश्वर ने चंद्रकौशिक की रचना की । प्रतिहार शासकों ने ब्राह्मण धर्म का विकास करवाया । वैष्णव संप्रदाय को विशेष प्रश्रय मिला । इनके राज्य में विष्णु के अतिरिक्त शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति की भी पूजा होती थी । गुर्जर साम्राज्य में बौद्धधर्म की उन्नति नहीं हो सकी और जैन धर्म मुख्यतः राजपुताना और पश्चिमी भारत में सीमित रहा । प्रतिहार शासकों ने मथुरा नगर का जो विकास किया, उसके मंदिरों की विशालता और कारीगरी को देखकर गजनवी भी ठगा रह गया । प्रतिहार साम्राज्य में वैभव और आर्थिक सम्पन्नता भी उच्चतम कोटि की थी ।

References: Internet & Competitive books.